Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-16-20

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 16-20
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :

Dr. RAMESH KUMAR RAMASAMY
PROFESSOR and HEAD, DEPARTMENT OF OTHER LANGUAGES, HINDUSTHAN COLLEGE OF ARTS & SCIENCE (AUTONMOMOUS),COIMBATORE-641028

Corresponding Author :

Dr. RAMESH KUMAR RAMASAMY
PROFESSOR and HEAD, DEPARTMENT OF OTHER LANGUAGES, HINDUSTHAN COLLEGE OF ARTS & SCIENCE (AUTONMOMOUS),COIMBATORE-641028

संगम साहित्य में जीवन के नैतिक मूल्य

सार (Abstract) : (प्रस्तुत लेख संगम साहित्य, विशेष रूप से 'पुरनानूरु' और '*திருக்குறள்*' (तिरुक्कुरल) के माध्यम से प्राचीन तमिल समाज के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के नैतिक मूल्यों (Aram) का विश्लेषण करता है। संगम युग में शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का आधार माना गया, जहाँ गुरु के प्रति समर्पण सर्वोपरि था। लेख यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति के लिए 'सांद्रोन' (एक आदर्श गुणवान मनुष्य) बनना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य था, जिसके लिए सत्यनिष्ठा, पर-स्त्री का मोह न करना और आत्म-नियंत्रण जैसे गुणों को अनिवार्य बताया गया। इसके अतिरिक्त, 'परोपकार' (*ஈகை*) और 'अतिथि सत्कार' को गृहस्थ जीवन के मुख्य स्तंभों के रूप में रेखांकित किया गया है, जहाँ धन का संचय नहीं बल्कि उसका वितरण ही वास्तविक सफलता मानी गई। अंततः, यह लेख 'सामाजिक जिम्मेदारी' के उस दर्शन को प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति स्वयं के लिए नहीं बल्कि 'लोक-कल्याण' (*ஒப்புரவு*) के लिए जीता है। यह जीवन शैली आज के आधुनिक युग में भी मानवीय मूल्यों और निस्वार्थ सेवा की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।)

संगम साहित्य व्यक्ति के जीवन को एक निश्चित अनुशासन में बांधता है और उसके परिवार एवं समाज के प्रति कर्तव्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। विशेष रूप से, **पुरनानूरु** जैसे ग्रंथ यह खूबसूरती से बताते हैं कि एक व्यक्ति को अपने जीवनकाल में किन जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए। व्यक्तिगत जीवन के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य यहाँ दिए गए हैं :

1. शिक्षा ग्रहण करना (ज्ञान की खोज) : संगम काल में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसे जीवन के अनुशासन (Ethical conduct) के रूप में देखा जाता था। **"உற்றுழி உதவியும் உறுபொருள் கொடுத்தும் பிற்றைநிலை முனியாது கற்றல் நன்றே"** — *पुरनानूरु (புறநானூறு)*

अर्थात्, गुरु को कष्ट के समय सहायता प्रदान करके, धन देकर और उनके प्रति विनम्र रहकर शिक्षा प्राप्त करना ही एक व्यक्ति का पहला कर्तव्य है। संगम काल में शिक्षा केवल जानकारी जुटाने का साधन नहीं थी, बल्कि व्यक्ति को पूर्ण बनाने का एक उपकरण थी। राजा आर्यपडै कड़न्त नेडुंजेळियन द्वारा रचित पुरनानूरु के गीत संख्या 183 में शिक्षा की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की गई है।

जाति भेद से परे शिक्षा : संगम काल में शिक्षा किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं थी। पुरनानूरु स्पष्ट रुप से कहता है कि शिक्षित व्यक्ति चाहे किसी भी कुल का हो, राजा भी उसका सम्मान करता था।

"வேற்றுமை தெரிந்த நாற்பாலுள்ளும்
கீழ்ப்பால் ஒருவன் கற்பின்
மேற்பால் ஒருவனும் அவன்கண் படுமே" — *(पुरनानूरु 183)*

अर्थ : समाज के चार वर्गों में से यदि कोई निचले स्तर का व्यक्ति भी शिक्षित होता है, तो उच्च स्तर का व्यक्ति भी उसके पास जाकर सलाह लेगा । यह स्थापित करता है कि केवल 'ज्ञान' ही उन्नति का आधार है।

गुरु का सम्मान : जैसा कि उल्लेख किया गया है, शिक्षा देने वाले गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया था।

- **आर्थिक सहायता:** छात्र को अपनी सामर्थ्य अनुसार वस्तुएं भेंट कर शिक्षा लेनी चाहिए।
- **सेवा:** गुरु के कठिन समय में छात्र को उनके साथ खड़े रहकर सहायता करनी चाहिए।
- **विनम्रता:** बिना किसी झिझक या नाराजगी के, गुरु के पीछे विनम्रता से खड़े होकर सीखना ही एक व्यक्ति का सौंदर्य और कर्तव्य है।

शिक्षितों का सम्मान और समानता : शिक्षित व्यक्तियों को हर जगह सम्मान मिलता था। इसने व्यक्ति को सीमाओं से परे एक 'विश्व नागरिक' (Global Citizen) बना दिया।

- ***"யாதும் ஊரே யாவரும் கேளிர்"*** (हर देश मेरा है, हर व्यक्ति मेरा रिश्तेदार है) — *कणियन पूंगुन्ड्रनार*।
- ***"கற்றோர்க்குச் சென்ற இடமெல்லாம் சிறப்பு"*** (शिक्षित व्यक्ति को हर स्थान पर सम्मान मिलता है)।

शिक्षा और नैतिकता : संगम साहित्य में शिक्षा केवल 'बुद्धि' नहीं बल्कि 'धर्म/नीति' (Aram) से जुड़ी थी।

- **मदुरै कांची:** यह इस बात पर जोर देता है कि अज्ञानता में बीता हुआ युवाकाल व्यर्थ है, इसलिए युवावस्था में ही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।
- **सिरुपंचमूलम:** यह कई स्थानों पर पुष्टि करता है कि शिक्षित व्यक्ति के लिए हर जगह सम्मान सुनिश्चित है।

माँ द्वारा पुत्र को 'सांद्रोन' (साधु/सज्जन) बनाना : संगम काल में एक माँ का मुख्य कर्तव्य अपने पुत्र को न केवल वीर, बल्कि शिक्षा में श्रेष्ठ 'सांद्रोन' (*சான்றோன்*) बनाना था।

"ஈன்று புறந்தருதல் என்தலைக் கடனே
சான்றோன் ஆக்குதல் தந்தைக்குக் கடனே" — *(पुरनानूरु 312)*

संगम साहित्य की विचारधारा	**विवरण**
सामाजिक प्रतिष्ठा	शिक्षित व्यक्ति का सम्मान राजा से भी अधिक होता था।
आर्थिक लाभ	गरीबी में भी शिक्षा नहीं छोड़नी चाहिए; यही स्थायी धन है।
राजनीतिक ज्ञान	मंत्रियों और दूतों का चयन उनकी शिक्षा के आधार पर ही किया जाता था।
जीवन पद्धति	शिक्षित व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होते और तटस्थता (सांद्राण्मई) के साथ जीते हैं।

संक्षेप में, संगम काल में शिक्षा केवल आजीविका का साधन नहीं थी, बल्कि व्यक्ति के **व्यक्तित्व (Personality)** को तराशने की एक महान कला थी।

2. पारिवारिक कर्तव्य (*சமூக உருவாக்கம்* - समाज निर्माण) : एक व्यक्ति को अपनी स्थिति के अनुसार जो कर्तव्य निभाने चाहिए, उन्हें कवि पोन्मुदियार ने पुरनानूरु (312) में स्पष्ट रूप से सूचीबद्ध किया है:

कर्तव्य निभाने वाला	जिम्मेदारी / कर्तव्य
माता	पुत्र को जन्म देना और उसका पालन-पोषण करना।
पिता	पुत्र को 'सांद्रोन' (गुणी/शिक्षित) बनाना।
लोहार (*கருமான்*)	युद्ध के लिए तीक्ष्ण भाला (வேல்) बनाकर देना।
राजा	प्रजा को अच्छे मार्ग पर ले जाना और शासन करना।
युवा (*தனிமனிதன்*)	युद्धक्षेत्र में वीरता के साथ प्रदर्शन करना।

3. परोपकार और अतिथि सत्कार : संगम तमिलों के जीवन में **परोपकार (*ஈகை*)** और **अतिथि सत्कार (*விருந்தோம்பல்*)** को दो आँखों के समान माना जाता था। उनका मानना था कि धन संचय करने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों में बाँटने के लिए है।

धन का वास्तविक उद्देश्य : पुरनानूरु बहुत खूबसूरती से समझाता है कि धन केवल स्वयं के उपभोग के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को देकर खुश होने के लिए है।

"*செல்வத்துப் பயனே ஈதல் துய்ப்போம் எனினே தப்புந பலவே*" — *(पुरनानूरु 189 - मदुरै कणक्कायनार के पुत्र नक्कीरार)*

अर्थ: धन संचय करने का वास्तविक लाभ दूसरों की सहायता करना है। यदि कोई सोचता है कि "मैं ही सब कुछ उपभोग करूँगा", तो वह धन कई तरह से नष्ट हो जाएगा।

बाँटकर खाना (*பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல்*) : अकेले खाना संगम तमिलों के लिए अपमानजनक माना जाता था। यदि 'अमृत' भी मिल जाए, तो उसे दूसरों के साथ साझा करना ही श्रेष्ठ माना गया।

**"*உண்டால் அம்ம இவ்வுலகம்...*
தமக்கென முயலா நோண்தாள்
பிறர்க்கென முயலுநர் உண்மையானே"** — *(पुरनानूरु 182 - कडलुल माय्न्त इलमपेरुवळुति)*

व्याख्या: यह दुनिया इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि ऐसे लोग हैं जो केवल अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीते हैं। यही उच्च गुण अतिथि सत्कार का आधार है।

निस्वार्थ दान (*ஈகையின் சிறப்பு*) : दान बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के किया जाना चाहिए। राजाओं ने कवियों और गरीबों को जिस तरह उदारता से दान दिया, उसे संगम साहित्य में **'कोड़ई मडम' (*கொடை மடம்*)** के रूप में सराहा गया है। संगम काल के **सात महान दानवीर (कडैयळु वल्ललकल)** जैसे पारि, ओरी, अधिकमान आदि इसके उत्तम उदाहरण हैं। राजा अधिकमान ने दुर्लभ 'नीला आँवला' (नैलिक्कनी) स्वयं न खाकर कवयित्री अव्वैयार को दे दिया ताकि तमिल और समाज का भला हो सके; यह दान की पराकाष्ठा है।

गृहस्थ का कर्तव्य - अतिथि सत्कार : तिरुवल्लुवर ने 'तिरुक्कुरल' में अतिथि सत्कार को गृहस्थ जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा माना है।

**"*இருந்தோம்பி இல்வாழ்வ தெல்லாம் விருந்தோம்பி*
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு"** — *(तिरुक्कुरल 81)*

अर्थ: घर में रहकर धन अर्जित करना और गृहस्थी चलाने का मुख्य उद्देश्य आए हुए अतिथियों की सेवा और सहायता करना ही है। संगम साहित्य **"गरीबी में भी अतिथि सत्कार"** करने की प्रशंसा करता है। बीज के लिए रखे अनाज को कूटकर अतिथि को खिलाना या पुरानी तलवार गिरवी रखकर अतिथि का सत्कार करने जैसी कहानियाँ आज भी

तमिलों के परोपकारी स्वभाव की गवाह हैं।

4. नैतिक और अनुशासित जीवन (ஒழுக்கம்) : संगम और नीति साहित्य में **'सांद्रोन' (சான்றோன்)** शब्द को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। व्यक्ति चाहे कितना भी धन कमा ले या युद्ध जीत ले, यदि उसमें नैतिक गुण नहीं हैं, तो वह 'सांद्रोन' नहीं कहला सकता।

सांद्राण्मई (साधुता/चारित्रिक श्रेष्ठता) : सांद्रोन वह है जो सद्गुणों से भरपूर हो। वल्लुवर ने इसके पाँच स्तंभ बताए हैं:

"அன்புநாண் ஒப்புரவு கண்ணோட்டம் வாய்மையோடு
ஐந்துசால்பு ஊன்றிய தூண்." — *(तिरुक्कुरल 983)*

प्रेम, लज्जा (गलत कार्य से डरना), परोपकार, करुणा और **सत्य (வாய்மை)** ही सांद्रोन को थामने वाले पाँच स्तंभ हैं।

सत्यनिष्ठा और झूठ न बोलना : सांद्रोन की पहली पहचान यह है कि उसके मुख से कभी असत्य नहीं निकलता। "सत्य" का अर्थ है ऐसे शब्द बोलना जिससे दूसरों का अहित न हो।

"மனத்தொடு வாய்மை மொழியின் தவத்தொடு
தானம்செய் வாரின் தலை." — *(तिरुक्कुरल 295)*

जो अपनी अंतरात्मा के प्रति ईमानदार रहकर सत्य बोलता है, वह दान और तप करने वालों से भी श्रेष्ठ है।

पर-स्त्री का मोह न करना : एक सांद्रोन को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए। दूसरों की पत्नी की इच्छा न करना व्यक्ति की वीरता और चारित्रिक श्रेष्ठता की सबसे बड़ी परीक्षा है।

"பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்றோர்க்கு
அறன்ஒன்றோ ஆன்ற ஒழுக்கு." — *(तिरुक्कुरल 148)*

अर्थात्, दूसरे की पत्नी की ओर आँख उठाकर भी न देखना ही सांद्रोन का धर्म और सबसे बड़ा अनुशासन है। संगम साहित्य में 'सांद्रोन' वह है जो **अनुशासन, सत्य और नियंत्रण** को अपनी जीवन-साँस मानता है।

5. सामाजिक जिम्मेदारी (சமூகப் பொறுப்புணர்வு) : व्यक्ति समाज का केवल एक हिस्सा नहीं है, बल्कि वह समाज के संचालन का आधार है। पुरनानूरु का गीत **"*தமக்கென முயலா நோன்றாள்...*"** सामाजिक जिम्मेदारी का सबसे बड़ा उदाहरण है।

निस्वार्थ श्रम : दुनिया क्यों नहीं नष्ट होती और आज भी क्यों चल रही है? इसका कारण सामाजिक जिम्मेदारी है।

"தமக்கென முயலா நோண்தாள்
பிறர்க்கென முயலுநர் உண்மையானே"

व्याख्या: सज्जन लोग कभी अपने लिए कार्य नहीं करते। वे अपनी शक्ति का उपयोग हमेशा दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही यह दुनिया टिकी हुई है। यदि उन्हें स्वर्ग का अमृत भी मिल जाए, तो वे उसे अकेले नहीं खाएंगे।

लोक कल्याण के लिए आत्म-त्याग : जब समाज पर कोई संकट आता है, तो उसे अपना निजी संकट मानकर रक्षा करना व्यक्तिगत कर्तव्य माना गया है । राजा अधिकमान द्वारा अव्वैयार को दुर्लभ फल देना इस बात का प्रमाण है कि **स्वार्थ से ऊपर परोपकार** है। पुरनानूरु के कवियों ने राजाओं को उपदेश दिया कि "जनता की भूख मिटाना ही एक शासक का सबसे बड़ा धर्म है"।

संकट के समय आगे आना : समाज में कष्ट होने पर एक व्यक्ति का पीछे हट जाना अपमानजनक माना जाता था। वल्लुवर 'ओप्पुरवु' (समाज की सहायता) को एक वैश्विक धर्म मानते हैं।

"ஊருணி நீர்நிறைந் தற்றே உலகவாம்
பேரறி வாளன் திரு." — *(तिरुक्कुरल 215)*

अर्थ: समाज के प्रति जागरूक व्यक्ति का धन उस 'सार्वजनिक तालाब' के समान है जिसका पानी पूरे गाँव के काम आता है । वह किसी की निजी संपत्ति नहीं, बल्कि सबकी साझा संपत्ति है।

निष्कर्ष : संगम साहित्य द्वारा सिखाई गई 'सामाजिक जिम्मेदारी' केवल एक सिद्धांत नहीं बल्कि एक जीवन शैली है। "मैं" के भाव से ऊपर उठकर "हम" के भाव तक पहुँचना ही एक व्यक्ति का सर्वोच्च धर्म है। समाज के किसी भी संकट में आगे बढ़कर रक्षा करना और लोक कल्याण के लिए स्वार्थ का त्याग करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है।

संगम साहित्य के अनुसार, एक व्यक्ति का जीवन शिक्षा प्राप्त करने, परिवार की रक्षा करने, वीरता के साथ देश की रक्षा करने और धर्म के मार्ग पर चलकर दूसरों की सहायता करने में ही सार्थक है।

साक्ष्य और संदर्भ (Citations & Context)

क्षेत्र / विषय	उद्धरण (मूल पादल / पंक्ति)	ग्रंथ और रचयिता
शिक्षा (Education)	"உற்றுழி உதவியும் உறுபொருள் கொடுத்தும் பிற்றைநிலை முனியாது கற்றல் நன்றே"	पुरनानूरु (183) - आर्यपडै कड़न्त नेडुंजेळियन (Purananooru Moolamum Urai-yum, Puliyur Kesikan, 2010 p.198)
समान शिक्षा (Equality in Education)	"வேற்றுமை தெரிந்த நாற்பாலுள்ளும் கீழ்ப்பால் ஒருவன் கற்பின் மேற்பால் ஒருவனும் அவன்கண் படுமே"	पुरनानूरु (183) (Purananooru Moola-mum Uraiyum, Puliyur Kesikan, 2010 p.198)
पारिवारिक कर्तव्य (Family Duty)	"ஈன்று புறந்தருதல் என்தலைக் கடனே... சான்றோன் ஆக்குதல் தந்தைக்குக் கடனே"	पुरनानूरु (312) - पोन्मुदियार (Purana-nooru Moolamum Uraiyum, Puliyur Kesikan, 2010 p.303)
धन का उद्देश्य (Purpose of Wealth)	"செல்வத்துப் பயனே ஈதல், துய்ப்போம் எனினே தப்புந பலவே"	पुरनानूरु (189) – नक्कीरार (Purananooru Moolamum Uraiyum, Puliyur Kesikan, Saradha publication, Chennai, 2010 p.201)
अतिथि सत्कार (Hospitality)	"இருந்தோம்பி இல்வாழ்வ தெல்லாம் விருந்தோம்பி வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு"	तिरुक्कुरल (91) (Thirukkural Adhigara Vilakkam, by Thirukkural Munusamy, Vanathi publication, Channai, 1988, p.50)
चारित्रिक श्रेष्ठता (Nobility)	"அன்புநாண் ஒப்புரவு கண்ணோட்டம் வாய்மையொடு ஐந்துசால்பு ஊன்றிய தூண்"	तिरुक्कुरल (983) (Thirukkural Adhigara Vilakkam, by Thirukkural Munusamy, Vanathi publication, Channai, 1988, p.417)
अनुशासन/नैतिकता (Conduct)	"பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்றோர்க்கு அறன்ஒன்றோ ஆன்ற ஒழுக்கு"	तिरुक्कुरल (158) (Thirukkural Adhigara Vilakkam, by Thirukkural Munusamy, Vanathi publication, Channai, 1988, p.77)
सामाजिक जिम्मेदारी (Social Responsibility)	"தமக்கென முயலா நோன்தாள் பிறர்க்கென முயலுநர் உண்மையானே"	पुरनानूरु (182) - इलमपेरुवळुति (Purananooru Moolamum Uraiyum, Puliyur Kesikan, Saradha publication, Chennai, 2010 p.197)
लोक कल्याण (Public Welfare)	"ஊருணி நீர்நிறைந் தற்றே உலகவாம் பேரறி வாளன் திரு"	तिरुक्कुरल (215) (Thirukkural Adhigara Vilakkam, by Thirukkural Munusamy, Vanathi publication, Channai, 1988, p.105)

•